लुधियाना। विधायक सरदार सिमरनजीत सिंह बैन्स तथा विधायक सरदार बलविंदर सिंह बैन्स को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात ब्र.कु.राज, ब्र.कु.नीलम तथा ब्र.कु.सुषमा।

शाहकोट। आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.अमीरचंद, ब्र.कु.राज, सतीश सांगरा तथा अन्य।

दिल्ली-वसंत विहार। एडिशनल डायरेक्टर जनरल प्रेस इन्फॉर्मेशन ब्यूरो डी.एन.मोहन्ती को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.क्षीरा।

अलीगढ़। डी.आई.जी. प्रकाश डी.को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.शीला। साथ हैं ब्र.कु.नीलम, ब्र.कु.दुर्गेश व ब्र.कु.सचिन।

तपा। गुरू गोविंद सिंह कालेज के प्रधान बी.एस.विर्क को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.उषा।

भुवनेश्वर। एयरपोर्ट निदेशक सूरत कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.गीता।

रामलीला से बनाएं ...

-पेज 6 का शेष

अब इस विकट वक्त में सिर्फ एक भाई और पत्नी ही रह गये। जब भाई व पत्नी वन में साथ जा सकते थे,तब बाकी परिवार के सदस्यों को कौन रोक रहा था? चलो भरत ने तो कोशिश भी की लेकिन और भी तो रिश्तेदार रहे होंगे! भरपूर परिवार था,चाचे, मामे, ताऊ उनके बच्चे भी तो रहे होंगे उनके परिवार में। कोई दिखा नहीं साथ में, मैसेज बिल्कुल साफ है कि दो जनों के अलावा कोई साथ नहीं था। पारिवारिक रूप से पूरी तरह से असफल। अब लोगों की बात करते है जब परिवार में कलह हो चाहे बीबी से हो, भाई से, बहन से हो या माँ-बाप से हो ,सास-बहू का झगड़ा हो तो कैसा महसूस करते हैं? सिर्फ झगड़ा ऐसा नहीं जैसा कि श्री राम के साथ हुआ। मामूली सा झंझट होते ही स्ट्रेस लेवल व कैसा मूड होता है उस वक्त आपका? कि हे भगवान यह मेरे साथ ऐसा क्यों होता है? सोचिए, श्री राम का स्ट्रेस लेवल उस पर्टिकुलर परिस्थिति में क्या रहा होगा?

बाहरी रूप से देखते हैं आज आप प्रिन्स हो, राजा बनने वाले हो मतलब वह पूरी तरह खुशियाँ मनाते, महल होता, गाड़ियाँ होती, हवाई जहाज़ ही अपना होता। इन सबके बावजूद दूसरे फेज के हालत में देखों क्या हो गया वह बिल्कुल फक्कड़। एक आदमी जितना सुख भोगता है मानो आज एक कार है, अगर छूट जाती तो ज्यादा से ज्यादा क्या होता स्कूटर पर आ जाता। अगर कोई ऐसा उदाहरण आपके सामने हो तो देखो ऐसा आदमी आपको कितना रोता मिलेगा? उसका रोना बंद ही नहीं होता। जिंदगी में सब सुविधा छिन जाये जो आज आपको मिल रहे हैं, कल फिर जाओ दफ्तर पैदल, कोई टी.वी. नहीं, मटके के ठंडे पानी से गुजारा चलाओ। सुनने में ही डर लगता है ना! घबराओ मत आपके साथ कुछ ऐसा होने वाला नहीं है। मगर श्री राम के साथ ऐसा हुआ।

सोशल में भी दूसरे हिस्से में श्री राम की जिंदगी को देखें तो कितना बड़ा झटका लगा। चलो मान लिया कोई परिवार का साथ नहीं मिला तो जनता के लोग ही साथ चले जाते। आज कोई एक राजनेता को दे दो वनवास लाखों नहीं लेकिन हजारों लोग तो कैम्प डालकर बैठ ही जायेंगे। मगर ऐसा नहीं हुआ। जिंदगी श्री राम के साथ मज़ाक कर रही थी। बुरा वक्त श्री राम की तरफ इस तरह पीछा कर रहा था कि पूछो मत। जैसे अब संकट कम था, अब कोई बीवी उठाकर ले गया, अब सुनने में बड़ी आसान सी बात लगती है, अगर आपकी बीवी को आपके मोहल्ले में कोई छेड़ ही दे तब उसी मोहल्ले में आँख उठाकर घूमना भारी पड़ जायेगा और अगर कोई उठाकर ले जाये तो! और यह एक आम आदमी की बात नहीं हो रही है एक ऐसे इन्सान की जो राजसी खानदान के हैं, क्षत्रिय हैं। और कोई उसकी बीवी उठाकर ले जाये? सोचो उस वक्त श्री राम के मानसिक स्तर के बारे में वो कैसा महसूस कर रहे होंगे? अब रामायण के तीसरे हिस्से के बारे में बात करेंगे, नेचर का यह नियम है जो चीज़ ऊपर जाती है वो नीचे भी आती है और जो नीचे जाती है वो चीज़ ऊपर भी जाती है। जिसको हम अप एण्ड डाऊन लाईफ कहते हैं। मतलब यह है कि स्थायी कोई चीज़ इस दुनिया में नहीं है। श्री राम पहले बिल्कुल ऊँचाई पर थे और अब बिल्कुल नीचे। जब वह नीचे होता है तब उसका रियल कैरेक्टर सामने आता है। अब इस मौके पर श्री राम की जिंदगी और श्री राम को देखते हैं। वो कैसे थे? **वो परफेक्ट थे और सबसे ज्यादा सक्सेसफुल सभी वक्त में थे।** पता है क्यों? क्योंकि हर परिस्थिति में उनकी जो प्रतिक्रिया थी जब वह नीचे होते गये तब **कभी भी किसी को दोष नहीं दिया।** कोई असंतोष नहीं और सिर्फ एक भाई के साथ और सामने था एक बहुत बड़ा चैलेन्ज और लड़ाई भी उस समय के सबसे बलवान राजा के साथ, सब कुछ करना था। क्या वो भरत से सेना नहीं माँग सकते थे? चलो भरत से सेना से नहीं माँगते, जनक की तो बेटी थी, सेना की सहायता तो किसी दूसरे राजा से भी मिल सकती थी। सेना भी अपने दम से ही बनानी थी और अन्त में उन्होने सेना भी बनाई, वह भी बंदरों की सेना। अब बंदर ही क्यों? अगर आप वेतन कम देंगे तो आपको बेकार आदमी ही मिलेंगे। अन्त में उन्हें भी उत्तम सेना तो नहीं मिली फिर भी निकल पड़े। कितनी अजब स्टोरी है, ऐसी स्टोरी हिंदुस्तान में अभी तक बनी नहीं। संदेश स्पष्ट है कि **जिन्दगी तो उतार चढ़ाव का खेल है।** और आपकी प्रतिक्रिया उस समय पर जब आप डाऊन हो उस वक्त मिलती है कि जिन्दगी में आप कितने सफल हैं।

श्री राम का उदाहरण योग्य था, इसी वजह से हमारे पूर्वजों ने इस रामलीला की भूमिका को खड़ा किया ताकि हर साल जब हम रामलीला देखें तो हम डाऊन फेज में चल रहे हों चाहे कैरियर हो,चाहे वो पारिवारिक कलंक की वजह से डाऊन हो,चाहे कोई फिजिकल समस्या में या कोई सोशल प्रेशर हो तो रामलीला देखकर प्रेरणा लेनी चाहिए। **तुलना करें अपनी समस्या और श्री राम की समस्या से कि श्री राम इतनी बड़ी समस्या से लड़कर जीत सकते हैं तो हम अपनी छोटी समस्या पर कभी भी जीत पा सकते हैं।** लेकिन होता क्या है असल जिन्दगी में? जब एक आदमी प्रेशर में आता है,चाहे वो कैरियर में हो, या फैमिली में। मान लो किसी फैमिली मेम्बर को किसी भी वजह से खो दो,या फिजिकली कोई समस्या आ जाये, थोड़ी देर पहले ठीक था अचानक आपको डॉक्टर बताता है कि आपको कोई गम्भीर बीमारी है, कोई फिजिकल लॉस हो जाये या किसी दोस्त ने आपको धोखा दे दिया तब क्या होता? तो क्या आप अपनी प्रतिक्रिया सकारात्मक रख पाते? आपको जानकर यह हैरानी होगी कि इस दुनिया में 75 प्रतिशत बीमारियां मेंटल प्रेशर की वजह से होती हैं मतलब दवाईयों की कम्पनियाँ मेंटल प्रेशर को हैंडल नहीं कर पाने की वजह से अपना धंधा कर रही हैं। 75 प्रतिशत दुनिया के लोग इस मुश्किल स्थिति में डॉक्टर के पास जाते हैं। अब मेंटल प्रेशर आता कब है? जब हम डाऊन फेज से गुज़र रहे होते है लेकिन बुरा वक्त तो चला जाता है परंतु बीमारियाँ हमारे पास स्थायी रूप से चलने लगती है। इसके अलावा धार्मिक प्रवचन होते हैं उनको सुनने कब जाते हैं? यानि भगवान की याद कब आती है? भले वक्त में या बुरे वक्त में? मतलब हमारा धर्म भी इन्हीं 75 प्रतिशत लोगों पर चलता है। दुनिया के सारे ज्योतिषी भी अपना धंधा इन्हीं लोगों की वजह से चला रहे हैं। अभी कितनी अजीब बात है जो सबको मालूम है कि **बुरे वक्त में अपना मनोभाव सकारात्मक बना लें तो परिस्थतियों को बहुत अच्छे ढंग से नियन्त्रित कर लेते हैं।** जैसे श्री राम ने धीर-गम्भीर होकर, दृढ़ निश्चय,नम्रता,साहस, सरलता से परिस्थिति का सामना किया तब जिंदगी में जय-जयकार हो रही है।

खुशी का आधार है सफलता

प्रश्न - देखा जाता है कि क्रोध करने से काम हो जाता है। तो क्या क्रोध जरूरी है?

उत्तर - हमें अपने जीवन में रूककर ये चेक करना होगा कि मुझे जीवन में रिजल्ट क्या चाहिए, क्या केवल काम कराना ही मेरा उद्देश्य है? समझो कि मेरा मन ऑपरेटिंग सिस्टम है। गुस्से से काम तो हो गया लेकिन दूसरी तरफ खुशी गुम हो गई। अब मुझे रिजल्ट कुछ और चाहिए। अब रिजल्ट तो वो खुशी वाला नहीं आ रहा है ना! गुस्सा बार-बार करने के बाद रिजल्ट 'खुशी' नहीं हो सकती है। अगर वो रिजल्ट नहीं आ रहा है जो मुझे चाहिए तो कहीं-न-कहीं मुझे ऑपरेटिंग सिस्टम को चेक करना पड़ेगा। क्योंकि निर्देश मैं कुछ और भर रही हूँ और परिणाम कुछ और उम्मीद कर रही हूँ। मैं करूं गुस्सा और चिंता तो खुशी कहां से होगी? आप गुस्से से भी काम क्यों करवा रहे हैं, चाहिए तो खुशी लेकिन हमारा दूसरा बिलीफ सिस्टम ये बना हुआ है कि जितना काम सम्पन्न होता जायेगा, उतनी सफलता मिलती जायेगी। जितनी सफलता मिलेगी उतनी खुशी मिलेगी। यह हमारा बिलीफ सिस्टम बना हुआ है। सब कुछ तो बिलीफ सिस्टम ही है। यह एक ऑपरेटिंग सिस्टम की तरह है। जिस क्वालिटी का सिस्टम होगा, उसी प्रकार का बिलीफ सिस्टम बनेगा। सारे दिन में हमें पता ही नहीं चलता कि हम कितने सारे बिलीफ सिस्टम के साथ काम कर रहे हैं।

-ब्र.कु.शिवानी

प्रश्न -मेरी मान्यता सही या गलत, इसे कैसे चेक करें?

उत्तर - यहां पर यह देखना होगा कि एक है हमारी मान्यतायें और एक है सत्यता। गुस्सा करना नेचुरल है यह एक बिलीफ है या यह सत्यता है। इसके लिए हमें अपने आप के साथ प्रयोग करना पड़ेगा। अगर हम एक भी गलत मान्यता के साथ जीवन में चले तो इसका सबसे कठिन पार्ट कौन-सा होगा? बिलीफ से थॉट क्रियेट होगा, थॉट से हमारा भाग्य बन रहा है। अगर मेरा एक भी बिलीफ सिस्टम थोड़ा-सा ऊपर-नीचे है तो उसका सीधा प्रभाव किस पर आयेगा? मेरे भाग्य पर आयेगा। इसलिए थोड़ी देर रूकें और अपने बिलीफ सिस्टम को चेक करे। सारे दिन में आप जो एनर्जी बाहर भेज रहे हो, आपके साथ जो हो रहा है, कहीं आपको अंदर डिस्टर्बेंस फील हो रही है तो थोड़ी देर रूक कर चेक करें कि इसमें हमारा कौन-सा बिलीफ सिस्टम काम कर रहा है? आपको अपना बिलीफ सिस्टम उसी समय दिखाई दे देगा। तुरंत ही आपको वो समीकरण बनाकर अपने लाइफ में रखनी है। मान्यता से संकल्प हैं और संकल्प से भाग्य का निर्माण होता है। जैसे ही आपके अंदर कोई थॉट क्रियेट हुआ, मान लो कि अभी हम दोनों बैठे हैं और सामने से चार लोग आ रहे हैं। वो चार लोग मुझसे बात न करके आपके साथ बात करते हैं। उस समय मैं अच्छा फील नहीं करती हूँ। तो उस समय कौन सी थॉट क्रियेट होगी? इसके पीछे हमारा कौन सा बिलीफ सिस्टम कार्य कर रहा है? उस समय हमारा यही थॉट क्रियेट होता है कि वह हमसे ज्यादा अच्छे हैं, लोग उन्हें ज्यादा चाहते हैं और इस थॉट से हमें अपमान की फीलिंग आती है। अब इसके पीछे हमारा कौन-सा बिलीफ सिस्टम कार्य कर रहा है? इसके पीछे हमारा यही बिलीफ सिस्टम कार्य करता है कि प्रशंसा उनकी होती है जो लोग अच्छे होते हैं। और इसका आधार हमने लोगों की प्रशंसा बना लिया। उस बिलीफ सिस्टम ने तुरंत क्या किया, जैसे ही मैंने चार लोगों को आपका सम्मान करते हुए देखा, तुरंत ही हमारे मन में यह संकल्प आया कि 'मैं अच्छा व्यक्ति नहीं हूँ, वह हमसे ज्यादा अच्छे हैं', उसके बाद ईर्ष्या की फीलिंग क्रियेट होगी।